بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः ईदुल-अज़हियः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 06.01.17 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

वक़्फ़-ए-जदीद के साठवें वर्ष की भव्य घोषणा

वक़्फ़-ए-जदीद का चन्दा देने वालों की माली क़ुर्बानियों का ईमान वर्धक वर्णन

मुकर्रमा असमा ताहिरा साहिबा पत्नि साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़लील अहमद साहब तथा मुकर्रम चौधरी हमीद नसरुल्लाह ख़ान साहब के सद्गुणों का वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

दुनया में इंसान माल ख़र्च करता है व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए भी, व्यक्तिगत लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी तथा कभी दान दक्षिणा भी कर देता है। परन्तु आज दुनया में कोई ऐसा समुदाय नहीं है, कोई ऐसी जमाअत नहीं है जिसके लोग और प्रतिनिधि विश्व के प्रत्येक नगर तथा प्रत्येक देश में एक उद्देश्य हेतु, एक हाथ पर एकत्र होकर अपना माल ख़र्च करने के लिए पेश कर रहे हों और वह उद्देश्य भी दीन का प्रकाशन तथा समाज सेवा हो। हाँ, केवल एक जमाअत है जो यह कार्य कर रही है और वह जमाअत है जिसको ख़ुदा तआला ने इस उद्देश्य के लिए स्थापित किया है। वह जमाअत है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की जमाअत है, वह जमाअत है जो मसीह मौऊद और महदी मअहूद की जमाअत है जिसके ज़िम्मे पूरे विश्व में इस्लाम की स्थापना का काम है जो लगभग पिछले 128 वर्षों से इस्लाम की तथा मानव जाति की सेवा के लिए अपना माल क़ुर्बान कर रही है और यह इस लिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जमाअत को क़ुरआन की शिक्षा के प्रकाश में धन के उचित उपयोग तथा माल की क़ुर्बानी का बोध अता फ़रमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि-

''मैं बार बार अनुरोध करता हूँ कि ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च करो क्यूँकि इस्लाम इस समय पतन की स्थिति में है। बाहरी तथा भीतरी दुर्बलताओं को देखकर मन व्याकुल हो जाता है तथा इस्लाम अन्य विरोधी धर्मों का शिकार बन रहा है'' फ़रमाया- जब यह स्थिति हो गई है तो क्या इस्लाम की प्रगति के लिए हम क़दम न उठाएँ। ख़ुदा तआला ने इसी उद्देश्य के लिए तो इस सिलसिले को स्थापित किया है। अतः इसकी प्रगति के लिए प्रयास करना, यह अल्लाह तआला के आदेश तथा इच्छा का आज्ञा पालन है।

फिर फ़रमाया- ये वादे भी अल्लाह तआला की ओर से हैं कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए देगा, मैं उसको कई गुना बरकत दूँगा। दुनया में ही उसे बहुत कुछ मिलेगा तथा मरने के बाद आख़िरत के प्रतिफल को भी देख लेगा कि कितना आराम मिलता है। अभिप्रायः यह है कि इस समय मैं इस बात की ओर तुम सबका ध्यान आकर्षित करता हूँ कि इस्लाम की प्रगति के लिए अपने मालों को ख़र्च करो। इस प्रकार आपके सहाबा ने इस बात को समझा तथा अपने माल दीन के उद्देश्य के लिए पेश किए।

अनेक लोगों के उदाहरण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों तथा कथनों में बयान फ़रमाए हैं जिन्होंने अपनी आवश्यकताओं की चिंता न करते हुए दीन के कामों में बढ़ चढ़ कर बलिदान किए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लोगों को यह क़ुर्बानियों की जाग ऐसी लगी कि एक के बाद दूसरी पीढ़ी क़ुर्बानियाँ करती चली जा रही है बल्कि वे लोग जो दूर सुदूर देशों के रहने वाले हैं, बाद में आकर शामिल हुए हैं, और हो रहे हैं, वे भी उन बुज़ुर्गों की क़ुर्बानिों की जब बातें सुनते हैं और या फिर यह सुनते हैं कि अमुक उद्देश्य के लिए बलिदान की आवश्यकता है और अल्लाह तआला के कलाम को सुनकर फिर क़ुर्बानियों के यथार्थ को समझते हैं, वे भी ऐसे ऐसे उदाहरण पेश करते हैं कि आश्चर्य होता है। अमीर लोगों से अधिक मध्यम वर्ग के लोग और ग़रीब लोग हैं जो क़ुर्बानियाँ पेश करते हैं तथा आश्चर्य जनक नमूने दिखाते हैं। वे यह नहीं सोचते कि हमारी छोटी सी क़ुर्बानी से क्या अन्तर आएगा बल्कि वे अल्लाह तआला के इस कलाम को समझते हैं जिसमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि-

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ अनुवाद- और उन लोगों का उदाहरण जो अपने माल अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए तथा अपनों में से कुछ को दृढ़ता प्रदान करने के लिए ख़र्च करते हैं, ऐसे बाग़ की सी है जो ऊँचे स्थान पर स्थित हो तथा उस पर तेज़ वर्षा हो तो वह बढ़ चढ़ कर अपने फल लाए और यदि उस पर तेज़ वर्षा न हो तो ओस ही पर्याप्त हो और अल्लाह उस पर जो तुम ख़र्च करते हो गहन दृष्टि रखने वाला है।

अतः निर्धन लोगों की यह क़ुर्बानी तल अर्थात ओस के समान है। यह तनिक सी नमी जो उनके तुच्छ से बलिदान से दीन के बाग़ को मिलती है वह अल्लाह तआला की कृपा से अत्यधिक फल लाती है। हम देखते हैं कि एक निर्धन जमाअत होने के बावजूद हम दुनया के हर एक स्थान पर इस्लाम के प्रसार तथा समाज सेवा के कार्य कर रहे हैं और फिर अल्लाह तआला की कृपा से हमारे कामों में बरकत भी अल्लाह तआला इतनी अधिक डालता है कि दुनया चकित रह जाती है कि इतने थोड़े साधनों के द्वारा तुम इतने अधिक काम किस प्रकार कर लेते हो। ये इस कारण से होते हैं कि ये क़ुर्बानियाँ करने वाले वे लोग हैं जो उन लोगों में शामिल होने का प्रयास करते हैं जिनका उदारहण अल्लाह तआला ने इस प्रकार दिया है कि फ़रमाया- يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ अर्थात- वे अपने माल अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए ख़र्च करते हैं तथा जब अल्लाह तआला की प्रसन्नता लक्ष्य हो तो फल भी अधिक लगते हैं, बरकत भी बहुत पड़ती है। जैसा कि मैंने कहा, इन बलिदानों के आज भी उदारहण हैं अपितु असंख्य उदारहण हैं। उनमें से कुछ पेश करता हूँ।

क़ादियान से हज़ारों मील दूर रहने वाली एक बच्ची जब अहमदियत और वास्तविक इस्लाम की गोद में आती है तो उसके विचार किस प्रकार बदल जाते हैं तथा क़ुर्बानी का उसे कैसा आभास प्राप्त हो जाता है, उसकी कहानी उस बच्ची की ज़बान से सुन लें। योगेन्डा में रहने वाली यह बच्ची है, अशिक्षित नहीं बल्कि युनिवर्सिटी में पढ़ रही है। कहती है कि पिछली जौलाई में मुझे युनिवर्सिटी में प्रवेश से पहले कुछ सामान ख़रीदना था परन्तु उसके लिए पर्याप्त धन राशि नहीं थी तथा मेरा चन्दा भी बाक़ी था तो मैंने वह धन राशि चन्दे में दे दी। मेरा दृढ़ विश्वास था कि अल्लाह तआला मेरी सहायता अवश्य करेगा और संतुष्ट थी कि मैंने अपना चन्दा अदा कर दिया है। एक महीने के पश्चात जब अभी युनिवर्सिटी खुलने में तीन दिन शेष थे तो मेरी एक चाची ने मेरी माँ को फ़ोन किया कि मैं कब यूनिवर्सिटी जा रही हूँ और मुझे अपने घर बुलाया। जब मैं शाम को उनके घर गई तो उन्होंने मुझे कुछ धन राशि पकड़ाई जो मेरी यूनिवर्सिटी की आवश्यकता से कई गुना अधिक थी तथा जो धन राशि चन्दे में दी गई उस धन राशि से दस गुना अधिक थी। इस प्रकार अल्लाह तआला ने मेरी दुआओं को सुना और ऐसे साधन से मेरी सहायता की जहाँ से मुझे आशा भी नहीं थी।

फिर भारत के ही एक साहब जो केरला की मंजेरी जमाअत के हैं उनके बारे में वहाँ के इंसपैक्टर क़मरुद्दीन साहब लिखते हैं कि उनका वैक्सीन का व्यापार है। मैं उनके पास चन्दा वक़्फ़-ए-जदीद की वसूली के लिए उनकी दुकान पर गया तो कहने लगे कि उनका बहुत रुपया फंसा हुआ है इस कारण से बड़ी कठिनाई हो रही है परन्तु इसके बावजूद उन्होंने एक बड़ी धन राशि का चैक देते हुए कहा कि इस समय तो बैंक एकाउन्ट में इतने पैसे नहीं हैं परन्तु दुआ करें कि यह विनीत इसका भुगतान शीघ्र कर सके। कहते हैं, अगले दिन ही उनका फ़ोन आया कि अल्लाह के फ़ज़्ल से चैक देने के बाद मेरे खाते में एक बड़ी रक़म आ गई है इस लिए आप अपना चैक कैश करा लें और कहने लगे कि यह केवल चन्दे की बरकत से है कि इतनी जल्दी अल्लाह तआला ने यह व्यवस्था पैदा कर दी।

फिर पश्चिमी अफ्रीक़ा के एक देश तंज़ानिया में रहने वाली एक विधवा महिला का उदारहण है जिसके बारे में वहाँ के अमीर साहब लिखते हैं कि औरंगा टाउन के मुअल्लिम साहब एक विधवा महिला अमीना के पास चन्दा वक़्फ़-ए-जदीद की आदयगी के लिए गए तो उन्होंने बड़े निराश मन के साथ कहा कि इस समय मेरे पास कुछ नहीं परन्तु जैसे ही कहीं से व्यवस्था होगी तो मैं स्वयं लेकर उपस्थित हो जाऊँगी। मुअल्लिम साहब अभी अपने घर भी नहीं पहुंचे थे कि वह महिला दस हज़ार शीलिंग लेकर उपस्थित हुई और बताया कि यह रक़म कहीं से आई थी, तो सोचा कि आपको दे आऊँ, पहले चन्दा अदा कर दूँ, अपने ख़र्च बाद में पूरे करूंगी। कहने लगीं और उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला का व्यवहार देखें कि मैं दस हज़ार जो उसके मार्ग में देकर गई थी, अभी घर भी नहीं पहुंची थी कि अल्लाह तआला ने मुझे पैंतीस हज़ार भिजवा दिए और जिसमें से पन्द्रह हज़ार बक़ाया चन्दा अदा करने बाद भी मेरे पास बीस हज़ार बच जाते हैं, यह केवल अल्लाह तआला का वरदान है और चन्दे की बरकत है और इस प्रकार उनका ईमान बढ़ा।

फिर पश्चिमी अफ्रीक़ा के एक देश बेनिन के एक अहमदी का नमूना देखें जिसे अहमदी हुए अभी एक साल भी नहीं हुआ परन्तु क़ुर्बानी की आत्मा का स्तर कैसा है बल्कि यह पुरानों के लिए भी नमूना है। वहाँ के मुबल्लिग़ लिखते हैं, मुज़फ़्फ़र साहब, कि करतूनी रीजन के एक गाँव डेकाम्बे में इस वर्ष जमाअत की स्थापना हुई। यहाँ के निवासी साधारणतः मछियारे हैं तथा यही उनकी आजीविका है। लोकल मिश्नरी ने इन गाँव वालों को चन्दे का आह्वान किया तो एक अहमदी दोस्त जो आर्थिक दृष्टि से बड़े दुर्बल हैं, उन्होंने तुरन्त तहरीक पर लब्बैक कहते हुए एक हज़ार फ़रांक की धन राशि क़ुर्बानी के लिए पेश कर दी और कहने लगे कि यद्यपि मेरी स्थिति इतनी अच्छी नहीं है परन्तु मैं नहीं चाहता कि जिस जमाअत में मैंने प्रवेश लिया है उसकी ओर से कोई तहरीक हो और मैं उसमें शामिल होने से रह जाऊँ।

कांगो कंशासा से मुबल्लिग़ शाहिद साहब लिखते हैं कि एक महिला निम्न स्तरीय व्यापारी कहती हैं कि वर्ष के आरम्भ में देश की प्रस्थितियों के कारण ऐसा लग रहा था कि इस वर्ष व्यापार में लाभ नहीं होगा परन्तु मैंने वर्ष के आरम्भ में वक़्फ़-ए-जदीद का चन्दा अदा कर दिया और सोचा कि अल्लाह तआला के साथ किया गया व्यापार हानि देने वाला नहीं हो सकता। बयान करती हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से उन्हें व्यापार में लाभ हुआ तथा देश की वर्तमान प्रस्थितियों के बावजूद व्यापार में कोई हानि नहीं हुई।

फिर अहमदियों के बलिदान का दूसरों पर कितना प्रभाव होता है और यह भी तबलीग़ के रास्ते खोलता है। बंगला देश के अमीर साहब कहते हैं कि तीन दोस्तों को तबलीग़ की जा रही थी परन्तु पर्याप्त तबलीग़ के बावजूद कोई बैअत के लिए तय्यार नहीं हो रहा था। पिछले जुम्अः को ये तीनों दोस्त मस्जिद में आए, जुम्अः के ख़ुत्बः के समय वक़्फ़-ए-जदीद के विषय में ध्यान दिलाया गया तो जुम्अः के बाद लोग चन्दे का भुगतान करने के लिए लाईनें बनाकर खड़े हो गए। इन दोस्तों ने जब

यह दृश्य देखा तो कहने लगे कि चन्दा लेने के लिए हमारे मौलवियों का गला और ज़बान दोनों सूख जाते हैं और फिर भी लोग चन्दा नहीं देते। यहाँ एक छोटी सी घोषणा की गई है और लोग चन्दा देने के लिए लाईनें बनाकर खड़े हो गए हैं, यही वास्तविक इस्लामी आत्मा है इस प्रकार इन तीनों दोस्तों ने इस दृश्य को देखने के बाद उसी समय बैअत कर ली और वक़्फ़-ए-जदीद का चन्दा भी अदा कर दिया।

हुज़ूर पूर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनया के विभिन्न देशों में जमाअत के लोगों के आर्थिक बलिदान के ईमान वर्धक वृत्तांत बयान फ़रमाए। फिर फ़रमाया कि जनवरी के पहले जुम्अः में वक़्फ़-ए-जदीद के नए साल के शुभारम्भ की घोषणा की प्रथा है तो इन कुछ घटनाओं के बाद अब मैं वक़्फ़-ए-जदीद के साठवें वर्ष के शुभारम्भ की घोषणा करता हूँ तथा पिछले वर्ष में अल्लाह तआला की कृपाओं का वर्णन भी कर दूँ कि वसूलियाँ क्या हैं? वक़्फ़-ए-जदीद का साल 31 दिसम्बर को पूरा होता है। उनसठवाँ साल समाप्त हुआ 31 दिसम्बर 2016 को। अल्लाह के फ़ज़्ल से दुनया की जमाअतों ने, जो अब तक रिपोर्टें आईं हैं उनके अनुसार अस्सी लाख बीस हज़ार पाउंड की क़ुर्बानी पेश की, पिछले वर्ष की तुलना में यह क़ुर्बानी ग्यारह लाख उनतीस हज़ार पाउंड अधिक है। इस वर्ष भी पाकिस्तान, दुनया की जमाअतों में वसूली की दृष्टि से सर्वप्रथम है।

पाकिस्तान के अतिरिक्त वसूली की दृष्टि से बाहर के देशों में पहली दस जमाअतें इस प्रकार हैं। नम्बर एक पर बर्तानिया है, दो पर जर्मनी, तीन पर अमरीका, नम्बर चार पर कैनेडा, पाँच पर भारत, छः पर आस्ट्रेलिया, सातवें नम्बर पर मिडिल ईस्ट की, आठवें नम्बर पर इन्डोनेशिया है, नवें नम्बर पर फिर मिडिल ईस्ट का एक देश है, दस्वें नम्बर पर घाना है और इसके बाद फिर बैल्जियम तथा स्वीज़र लैन्ड आते हैं।

प्रति व्यक्ति अदायगी के अनुसार अमरीका नम्बर एक पर है, फिर स्वीज़र लैन्ड है, फिर फ़िन लैन्ड है, फिर आस्ट्रेलिया है, सिंगापुर है, फ्रांस है, फिर जर्मनी, फिर ट्रेनिडाड, फिर बैल्जियम, फिर कैनेडा। फिर बर्तानिया नम्बर एक पर आने के बावजूद प्रतिव्यक्ति आदायगी में पीछे है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस वर्ष वक़्फ़-ए-जदीद में तेरह लाख चालीस हज़ार चन्दा देने वाले शामिल हुए जो पिछले वर्ष की तुलना में एक लाख पाँच हज़ार अधिक हैं। संख्या में अधिकता की दृष्टि से कैनेडा, भारत और बर्तानिया के अतिरिक्त अफ्रीक़ा में गिनी कनाकरी, कैमरोन, गैम्बिया, सीनिगाल, बेनिन, नाईजेरिया, कोंगो कंशासा, बर्कीना फ़ासो और तंज़ानिया ने विशेष कार्य किया है।

भारत के दस प्रदेश इस प्रकार हैं। नम्बर एक पर केरला, नम्बर दो पर जम्मू कशमीर फिर तामिल नाडु फिर कर्नाटका फिर तेलंगाना फिर उड़ीसा फिर वैस्ट बंगाल फिर पंजाब फिर उत्तर प्रदेश फिर देहली फिर महाराष्ट्र। भारत की दस जमाअतें इस प्रकार हैं। करोलाई नम्बर एक पर, फिर कालीकट, फिर हैदराबाद, फिर पित्थापीरयम, फिर क़ादियान, फिर कैनानूर टाउन, फिर कोलकाता, फिर बंगलोर, फिर सोलोर और फिर पयंगाड़ी। अल्लाह तआला इन समस्त क़ुर्बानियाँ करने वालों के जान और माल में अत्यधिक बरकत डाले तथा भविष्य में सम्बंधित ओहदेदारों को भी सक्रिय बनाए कि वे अपने काम उचित रूप से कर सकें तथा जो कमियाँ हैं उनको पूरा करने का प्रयास करें। विशेष रूप से शामिल होने वालों में बढ़ौतरी होनी चाहिए, प्रत्येक को शामिल करना भी आवश्यक है, चाहे थोड़ी रक़म देकर शामिल हों।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अब मैं नमाजों के पश्चात दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाउँगा। पहला जनाज़ा है मुकर्रमः मुहतरमः असमा ताहिरा साहिबा का जो मुकर्रम साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़लील अहमद साहब की पत्नि थीं। 23 दिसम्बर 2016 को 79 वर्ष की आयु में कैनेडा में इनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

फ़रमाया- दूसरा जनाज़ा मुकर्रम चौधरी नसरुल्लाह ख़ान साहब का है जो 4 जनवरी 2017 को लाहौर में 83 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हुज़ूर-ए-अनवर ने दोनों बुज़ुर्गों के सद्गुण बयान फ़रमाए और फ़रमाया कि अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत तथा रहमत का सलूक फ़रमाए, इनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए, इनकी संतान को भी वफ़ा के साथ ख़िलाफ़त और जमाअत से जोड़े रखे तथा उनकी नेकियाँ जारी रखने का सामर्थ्य प्रदान करे।